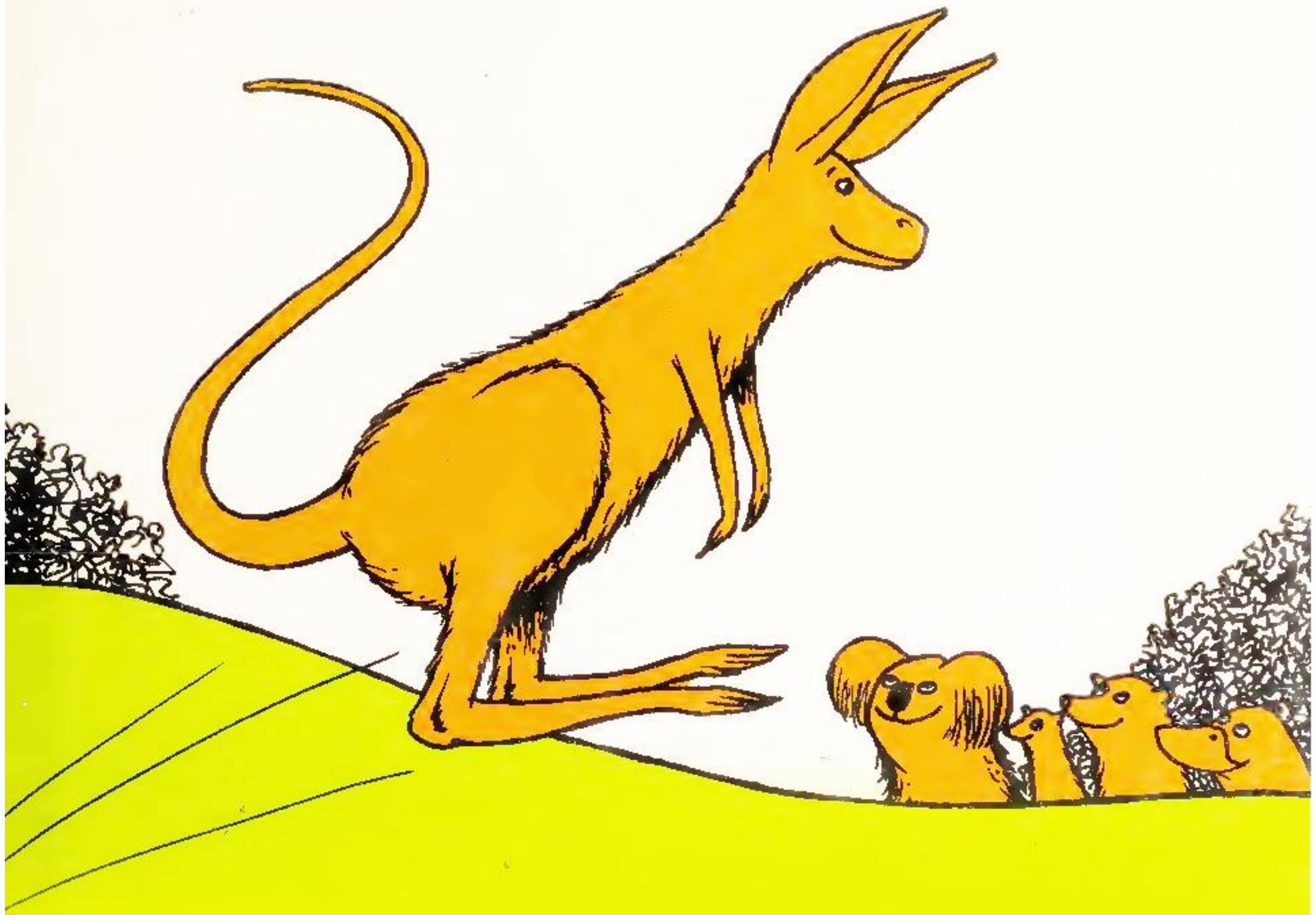
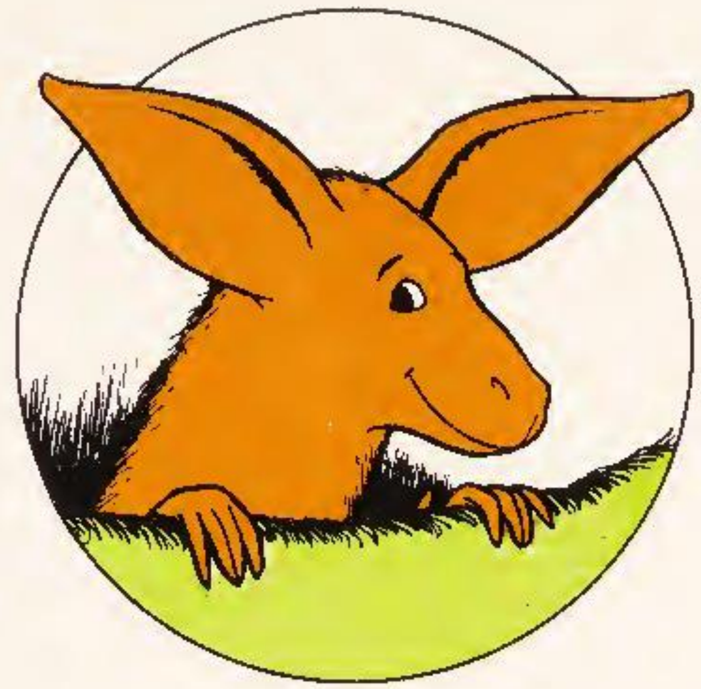


छोटा बच्चा कंगारू

बर्नार्ड वाइसमैन

चित्र: रॉबर्ट लोपशायर

हिंदी: छाया भदौरिया

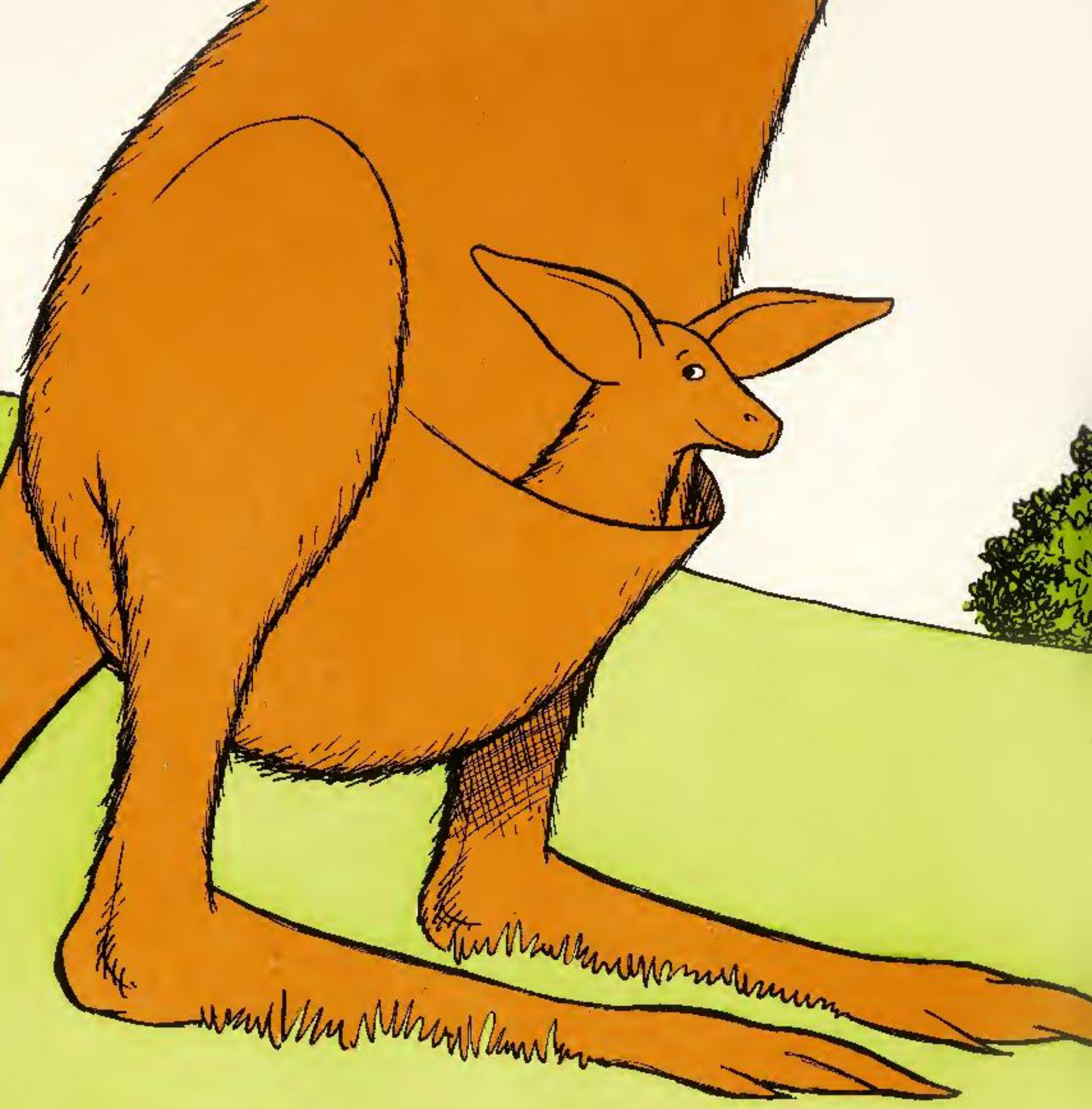


छोटा बच्चा कंगारू

बर्नार्ड वाइसमैन

चित्र: रॉबर्ट लोपशायर

हिंदी: छाया भदौरिया

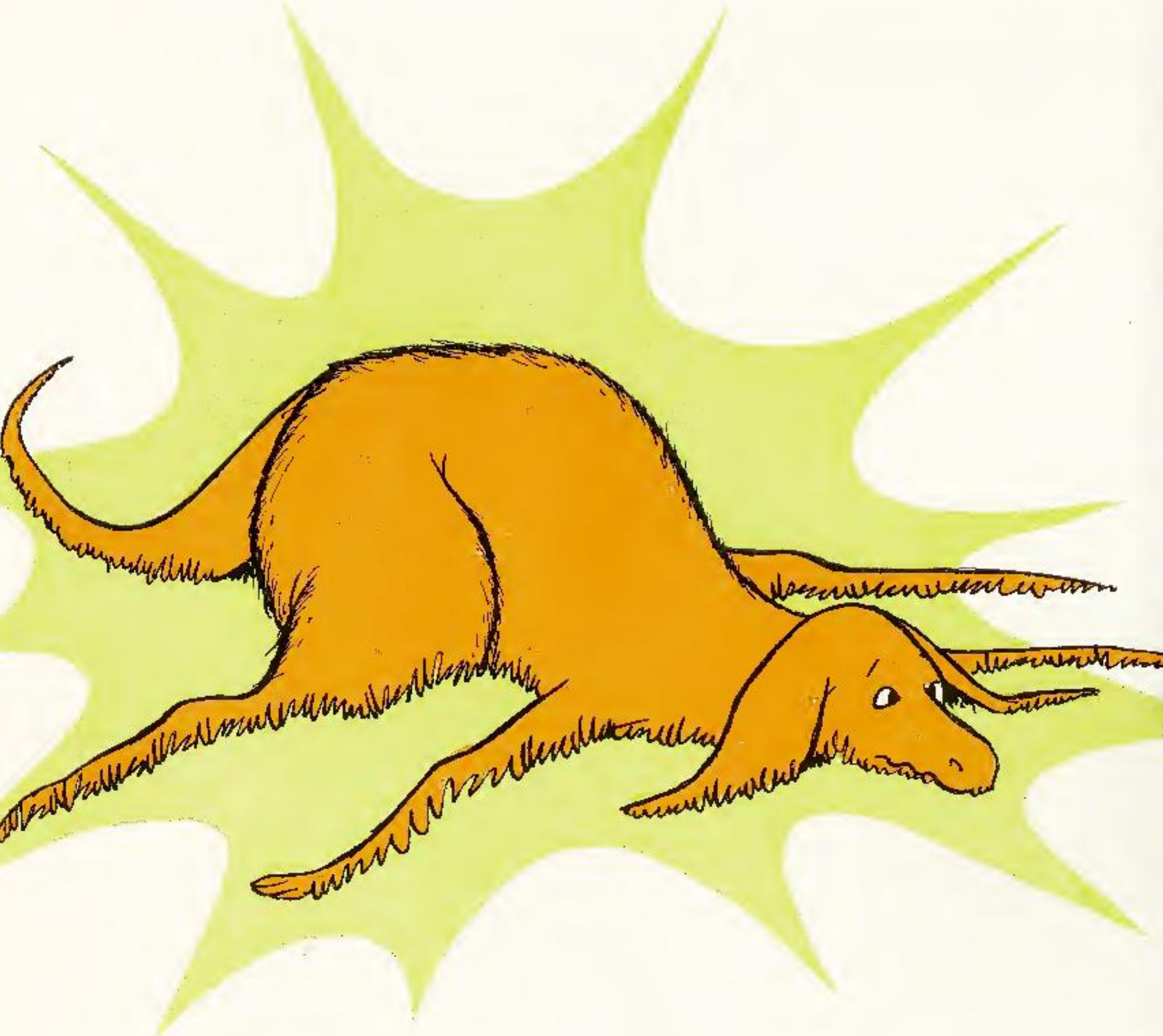


छोटा बच्चा कंगारू..

माँ जब फुदकी

वह बाहर टपका!





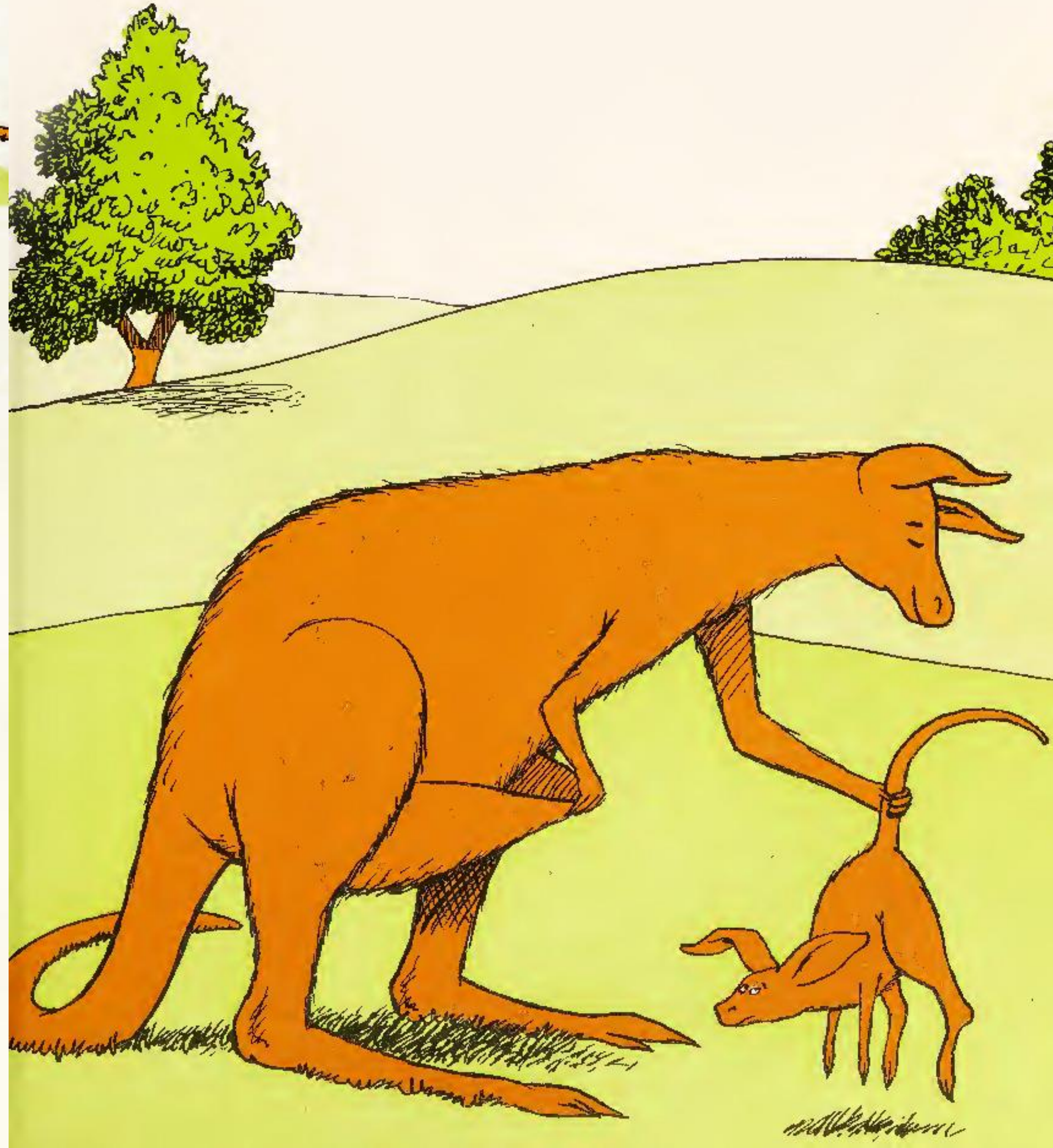
नीचे गिरते ही चिल्लाया,

देखो मैं थैली से बाहर आया।

माँ कहती हैं,

“कसकर पकड़ो,

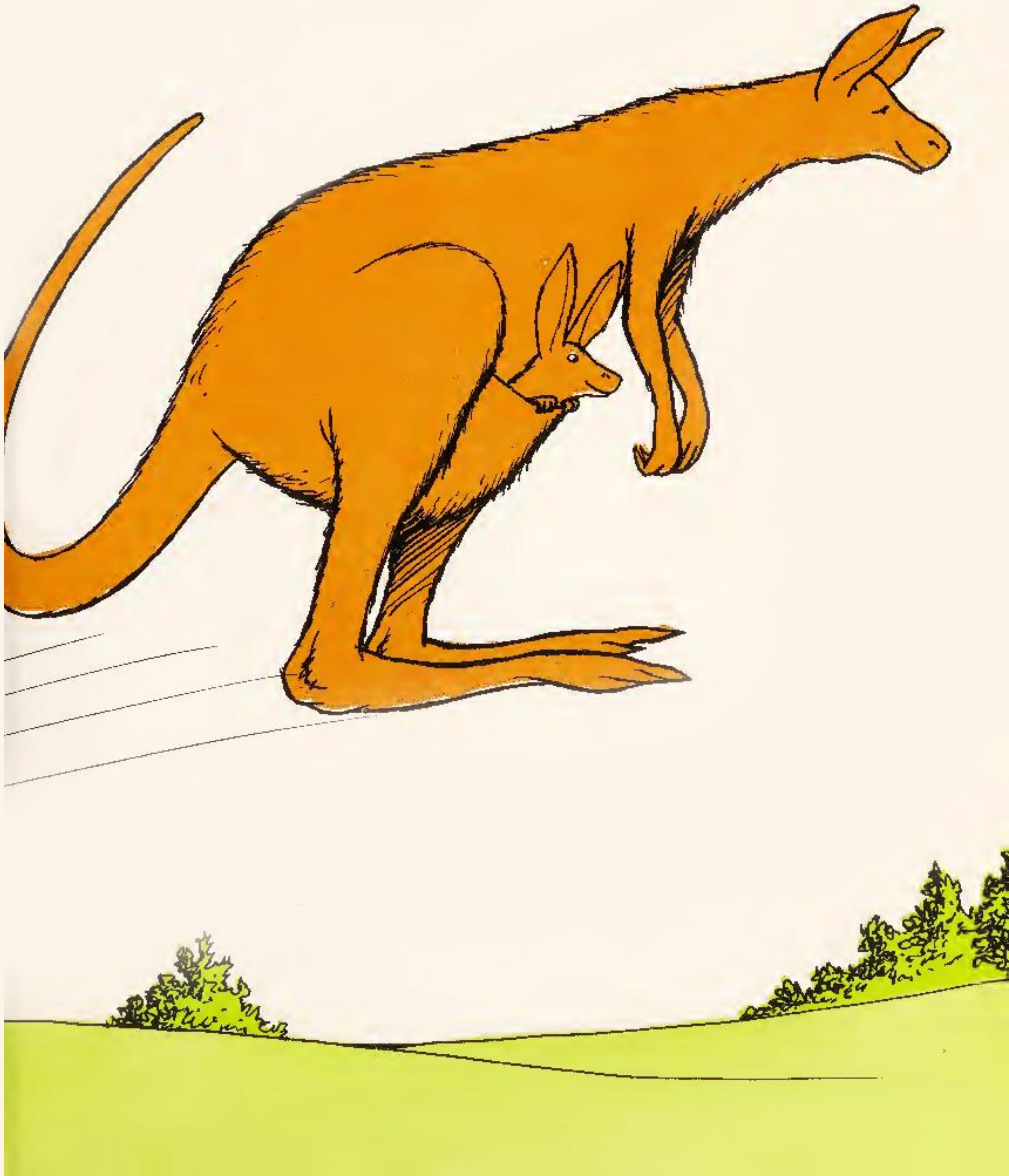
इधर-उधर ना मटको”



छोटा बच्चा कंगारू..

अब वह जानता है

कि क्या करना है।



वह कहता है, “देखो-

देखो वहाँ कौन है!

एक नया कोआला भालू!

हैलो दोस्त,

अंदर आ आओ।

मेरे साथ बैठो

सैर करते जाओ”



छोटा बच्चा कंगारू
भालू को बताता है
कि क्या करना है।

कसकर पकड़ो!
कसकर पकड़ो!
सारी ताकत
यहाँ पे रख दो

फुदक-फुदककर माँ है जाती,
ऊँची-ऊँची छलाँग लगाती।
भालू डरकर चिल्लाता,
उड़ने से है घबराता।



वे देखते हैं कि एक चूहा

फल का टुकड़ा खा

रहा है। छोटा बच्चा

कंगारू चिल्लाता है,

“आओ, आओ,

तुम भी आओ,

अंदर आकर,

बैठ जाओ।

फल का टुकड़ा,

हमें भी खिलाओ।”



वह सभी को

एक-एक टुकड़ा

खाने को देता है।

वे उससे कहते हैं,

"कसकर पकड़ो!"

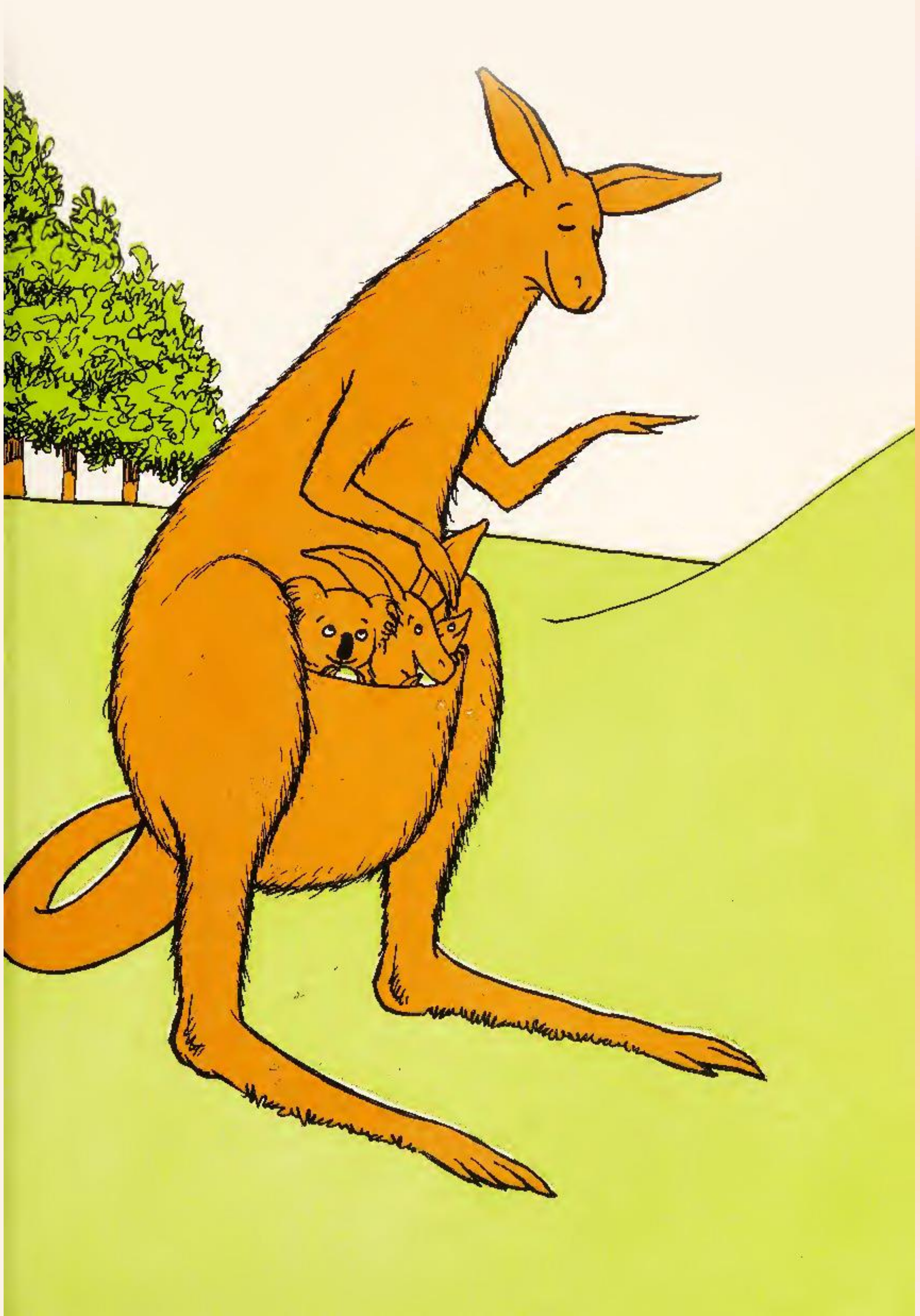
माँ कहती है,

"सीधे बैठना

नहीं हिलना-डुलना।

उस पहाड़ी पर,

है अब चढ़ना।"



माँ फुदकती है।

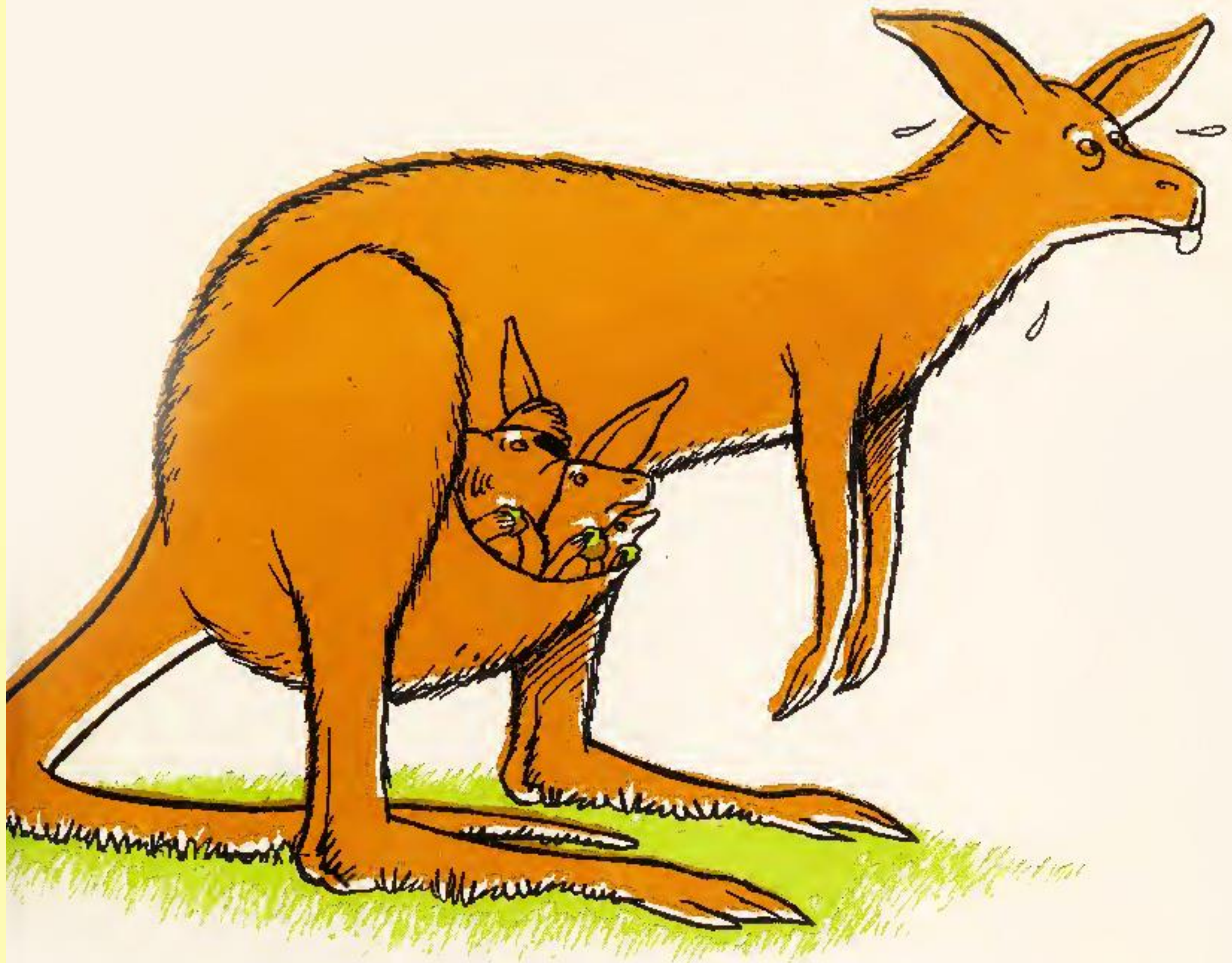
हमको लेके

ऊपर चढ़ गई,

लेकिन ऊपर

जाके थक गई।





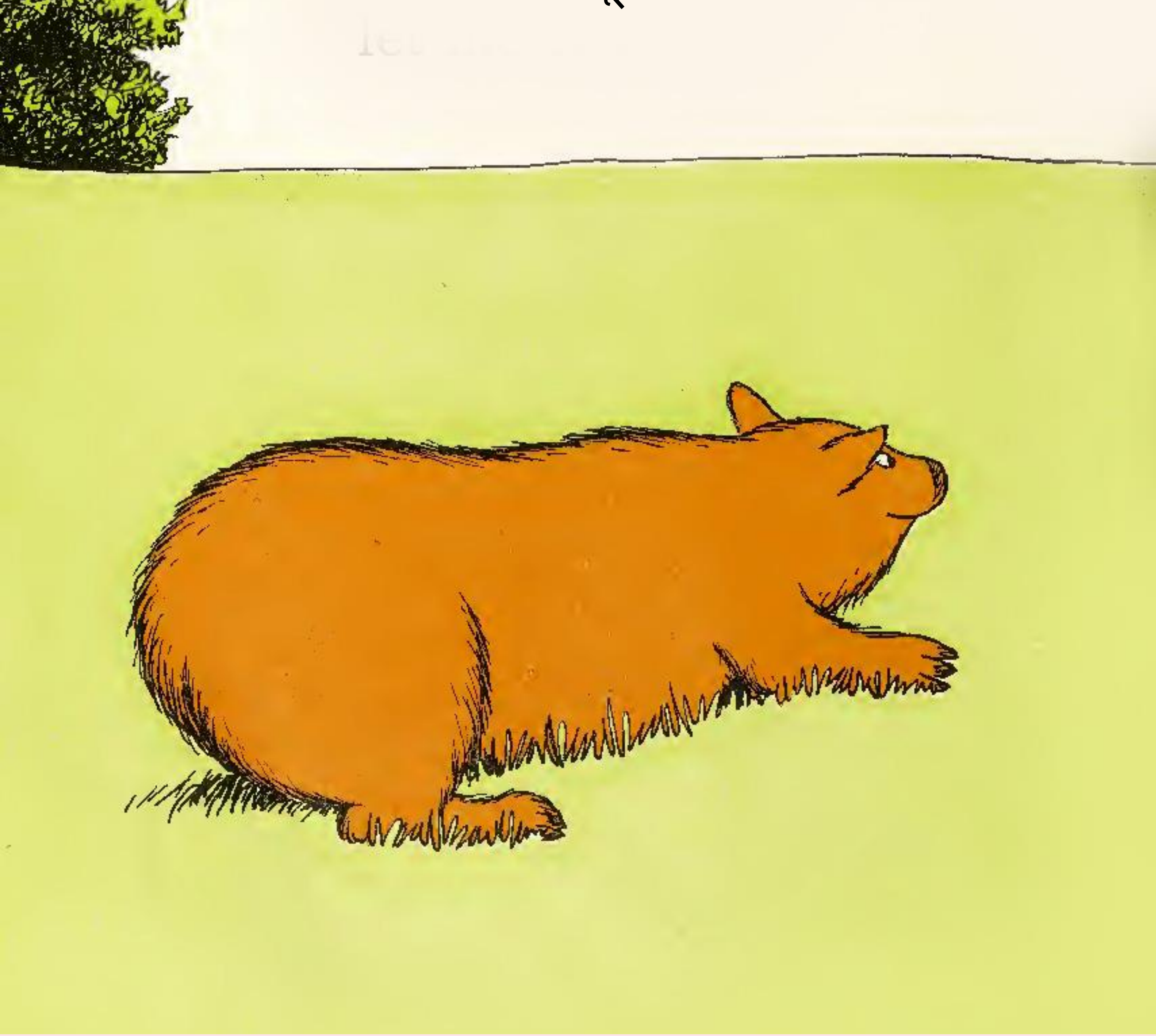
माँ तो हाँफ़ रही

रुक-रुककर।

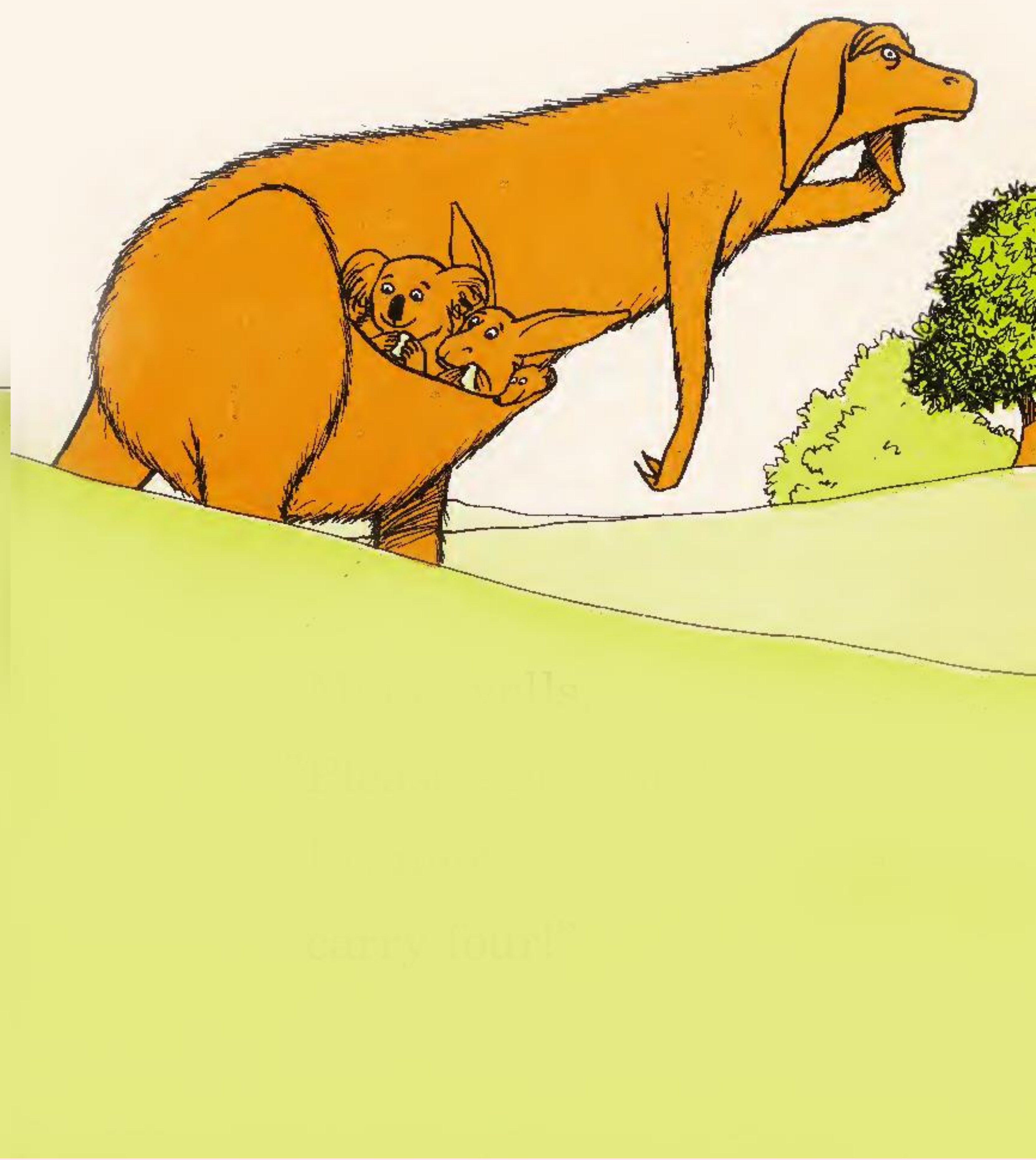
“तीन दोस्त हैं

अब बस कर।”

तभी दिख गया
एक वोम्बेट।
गोलमटोल
और मोटा सेठ।
फल को देखकर
वोम्बेट ना माने
“मुझे पसंद है
आता हूँ खाने।”



माँ चिल्लाए
“बस-बस... अब और नहीं
चार को उठाना
मेरे बस का नहीं!”



छोटा कंगारू रोता है,

"माँ, उसे भी ले जाओ!

आप बड़ी हो

आपमें है शक्ति

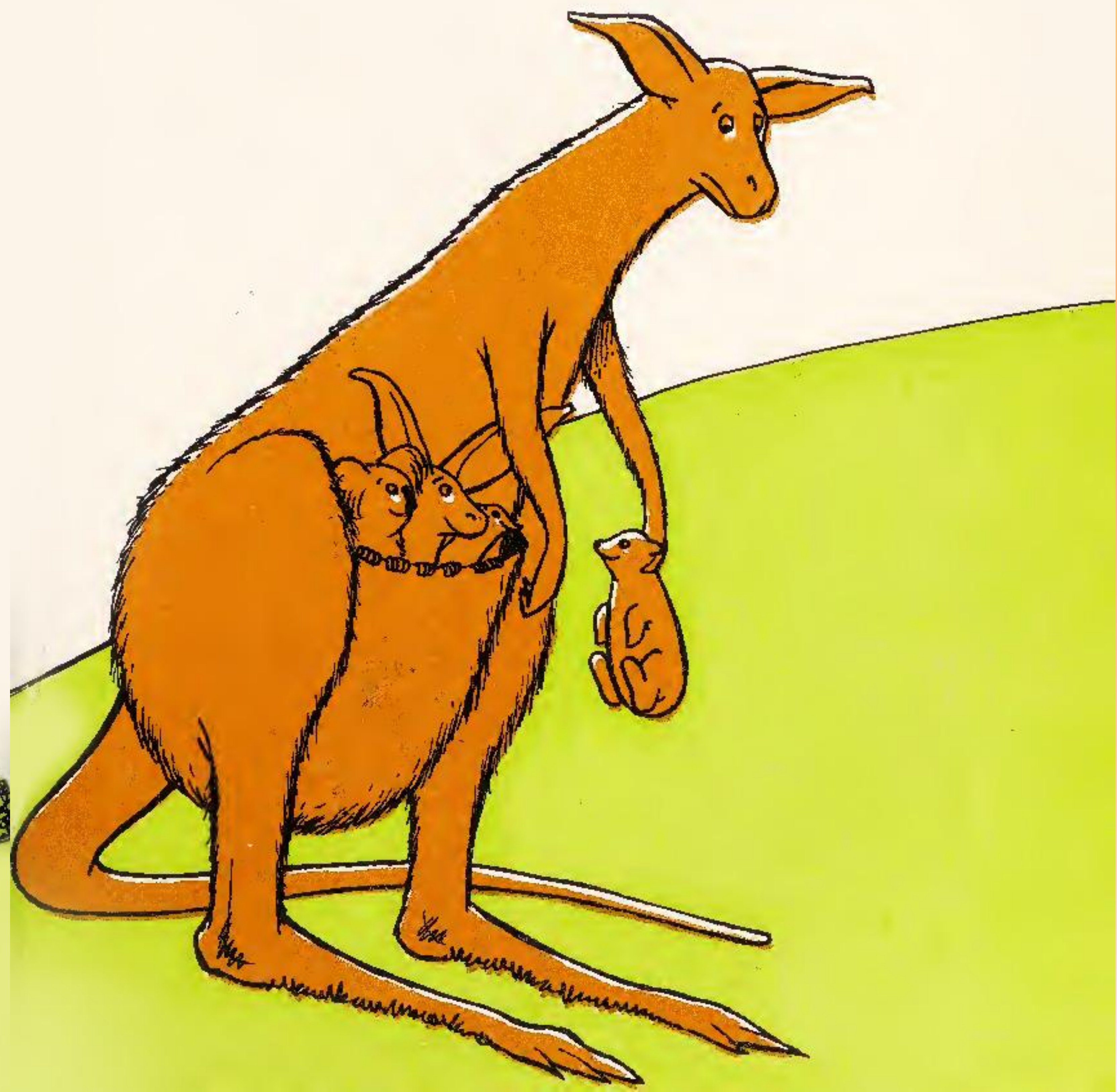
एक और के आने से

कहाँ आप थकतीं।”



हाँ कहकर के आह भरी,

“करती हूँ मैं कोशिश पूरी।”

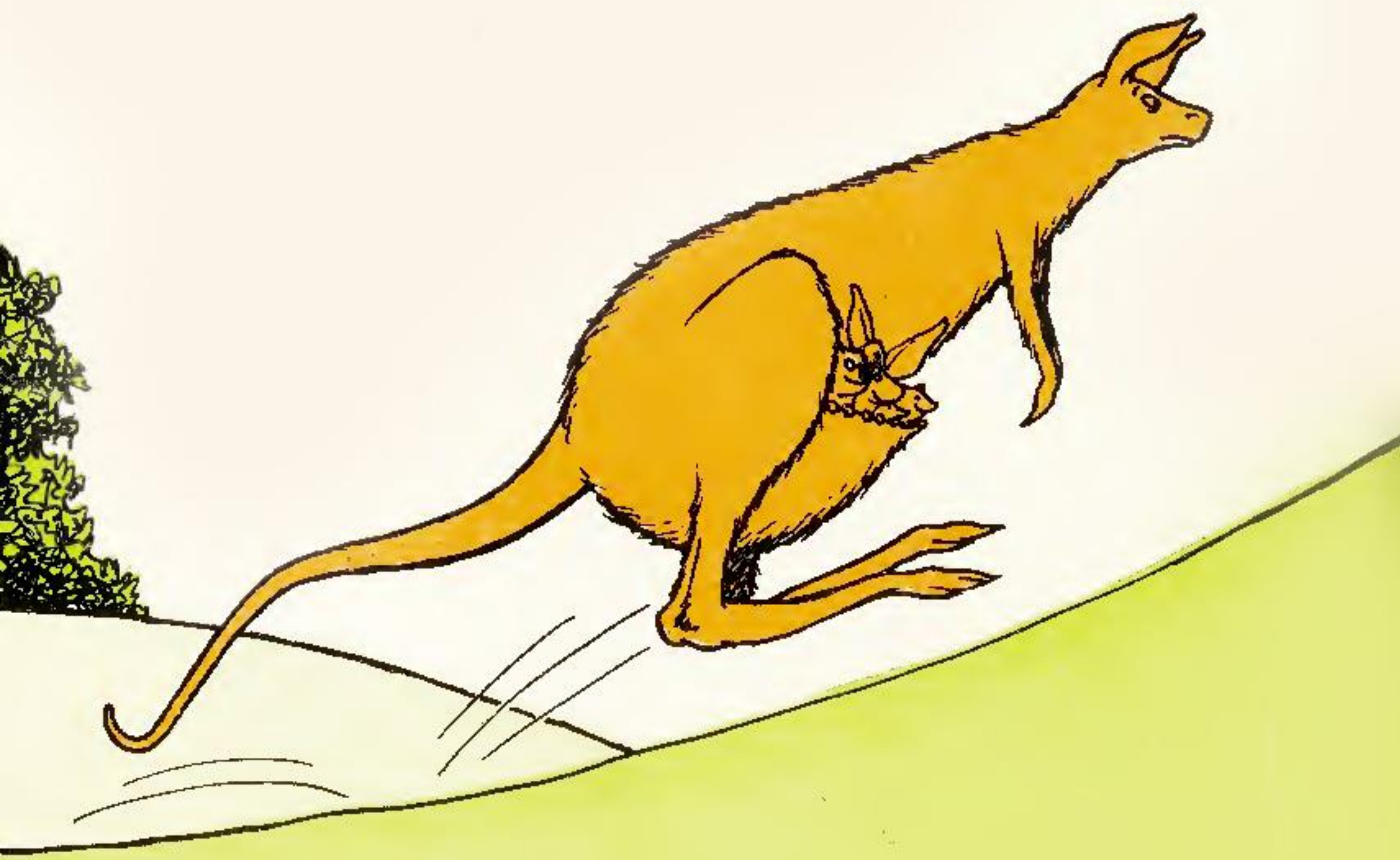


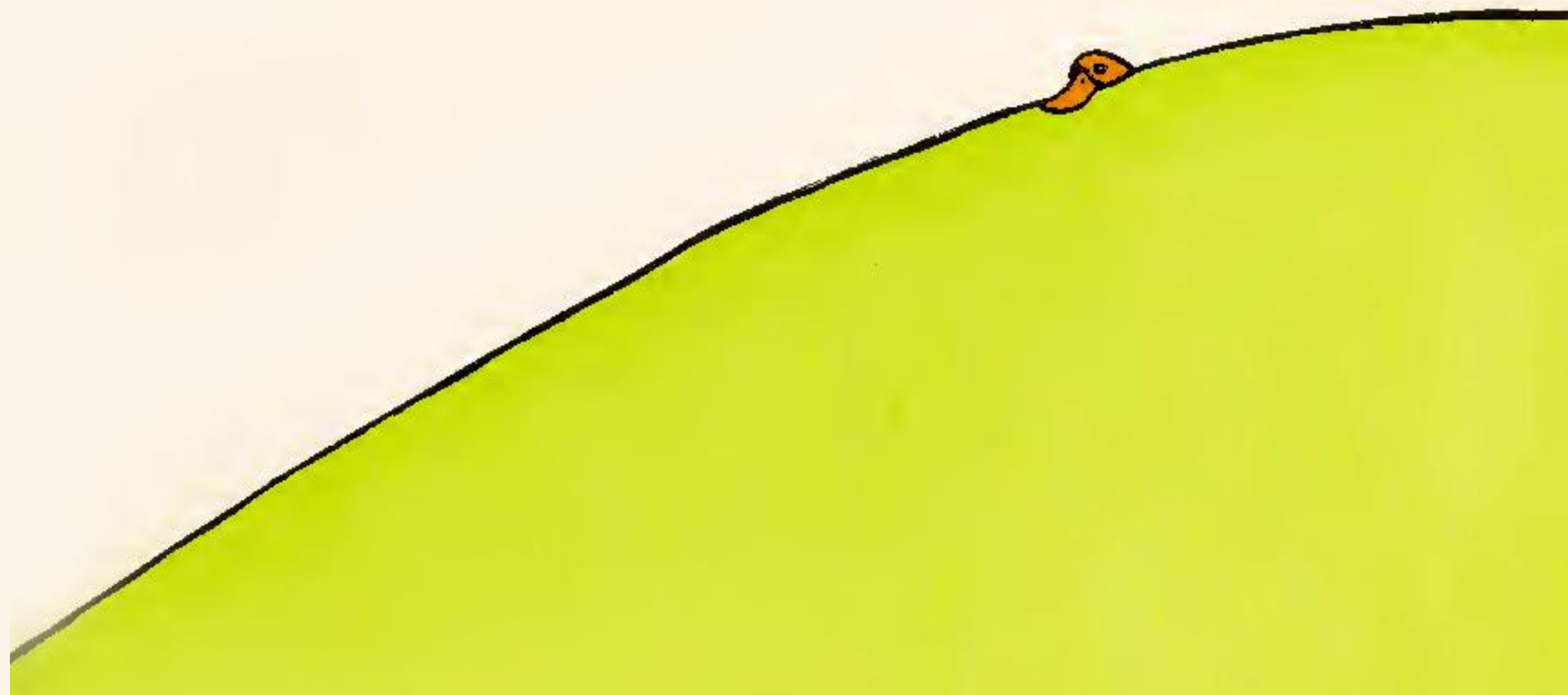
फुदक के माँ को

पसीना आया।

कितना थक गई

नहीं बताया!





वॉम्बैट पहाड़ी की ओर देखता है और

उसे एक डकबिल दिखाई देता है।

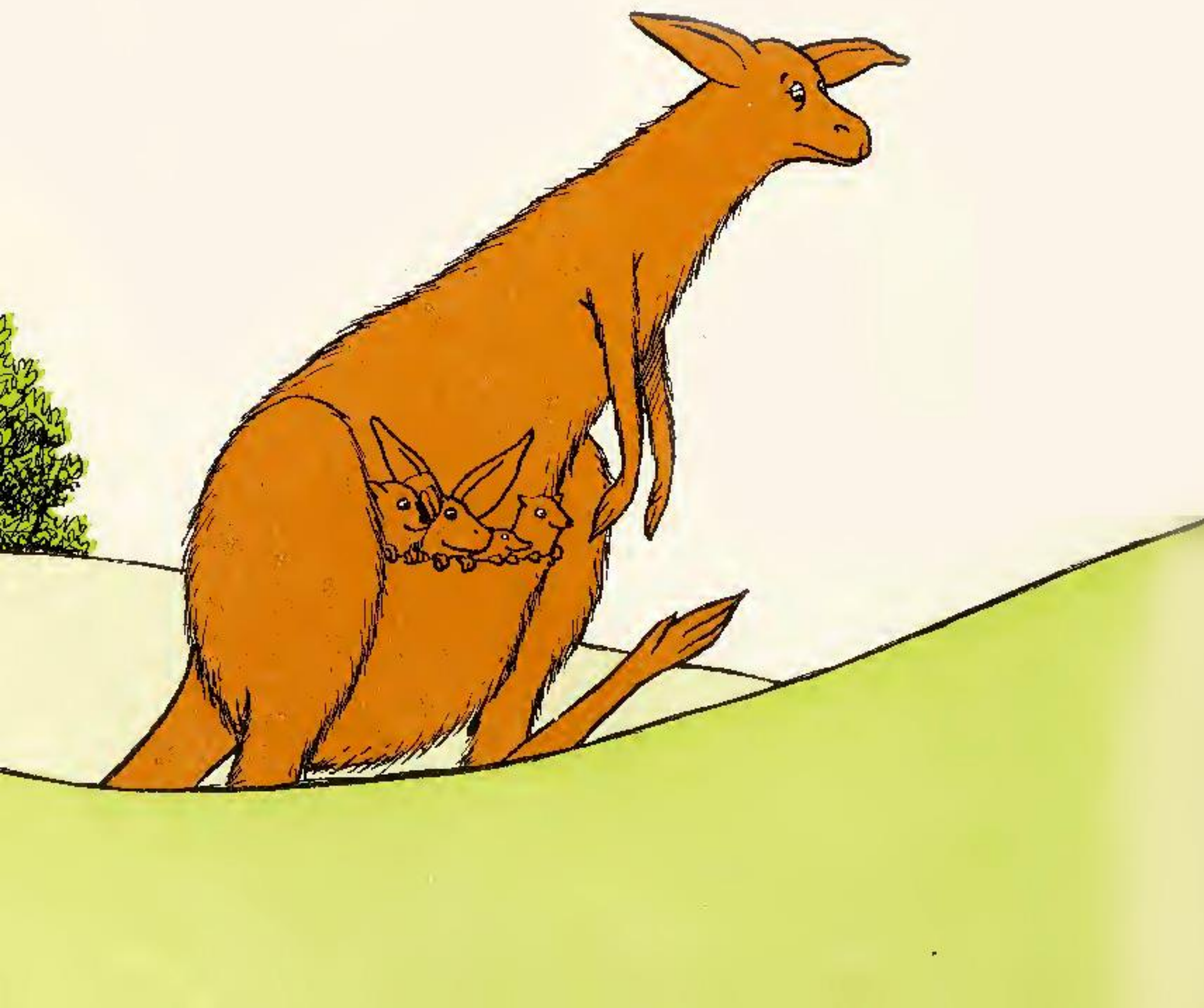
वहाँ एक बत्तख है!

वॉम्बैट चिल्लाया

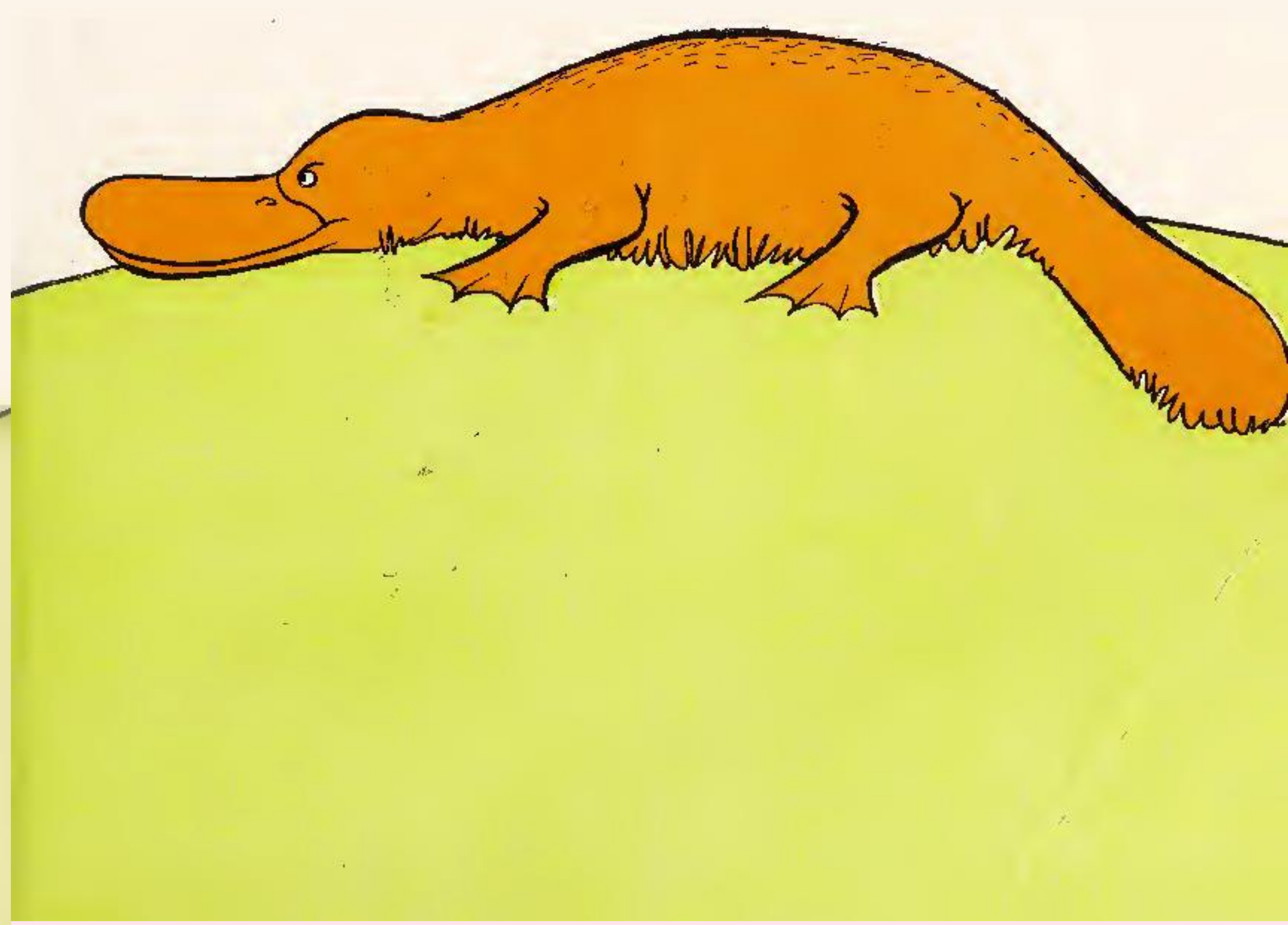
लेकिन उसका अंदाज़ा

गलत ही आया

पीठ पे इसके ढेरों बाल
ये नहीं करता क्वैक फिलहाल



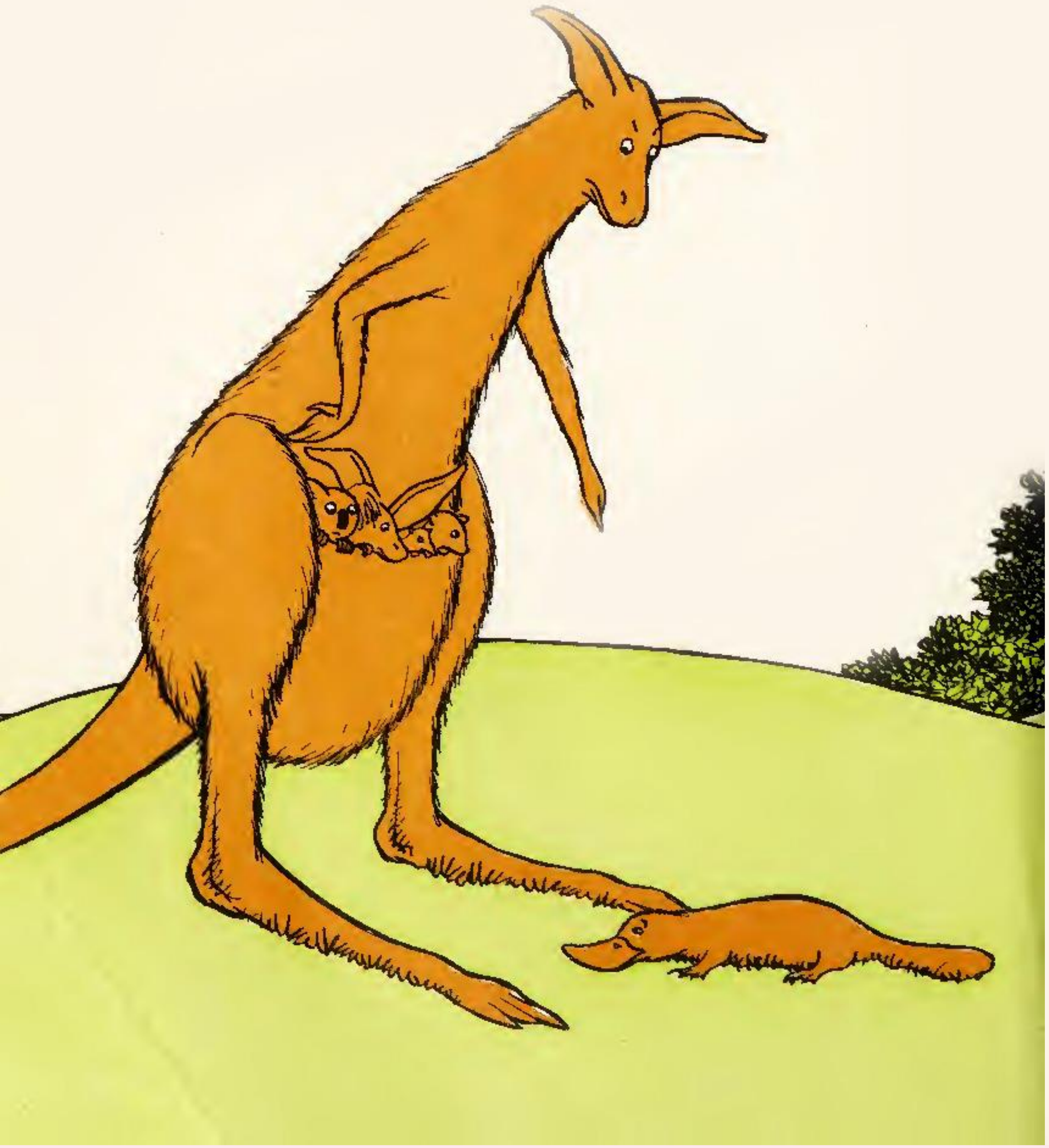
चूहे को अब हँसी है आई
“आधा बत्तख वो
दिखता है भाई।”



माँ पीछे से है चिल्लाई

“शर्म से डूब मरो,

प्लेटीपस है भाई!”



प्लेटीपस दिखता है

थोड़ा-सा दुखी,

उसे देख हम

कैसे हों सुखी

छोटा बच्चा कंगारू

कहता है, "हैलो!

तुम कैसे हो?"

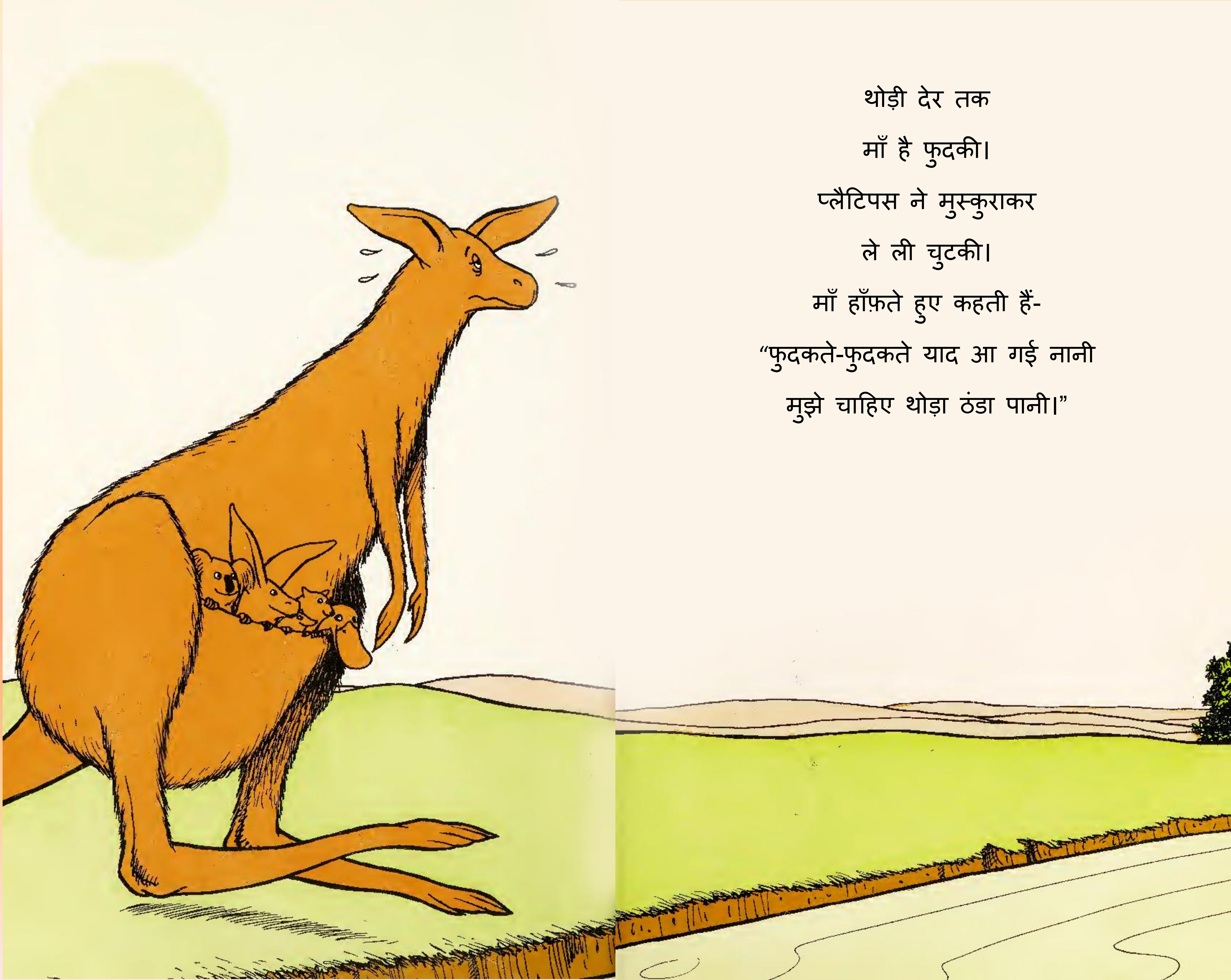
माँ कहती हैं, "प्लैटिपस,

दुखी मत हो,

हमारे साथ आओ”



थोड़ी देर तक
माँ है फुदकी।
प्लैटिपस ने मुस्कुराकर
ले ली चुटकी।
माँ हाँफ़ते हुए कहती हैं-
"फुदकते-फुदकते याद आ गई नानी
मुझे चाहिए थोड़ा ठंडा पानी।"



सब घूँट-घूँट करके पीते हैं।

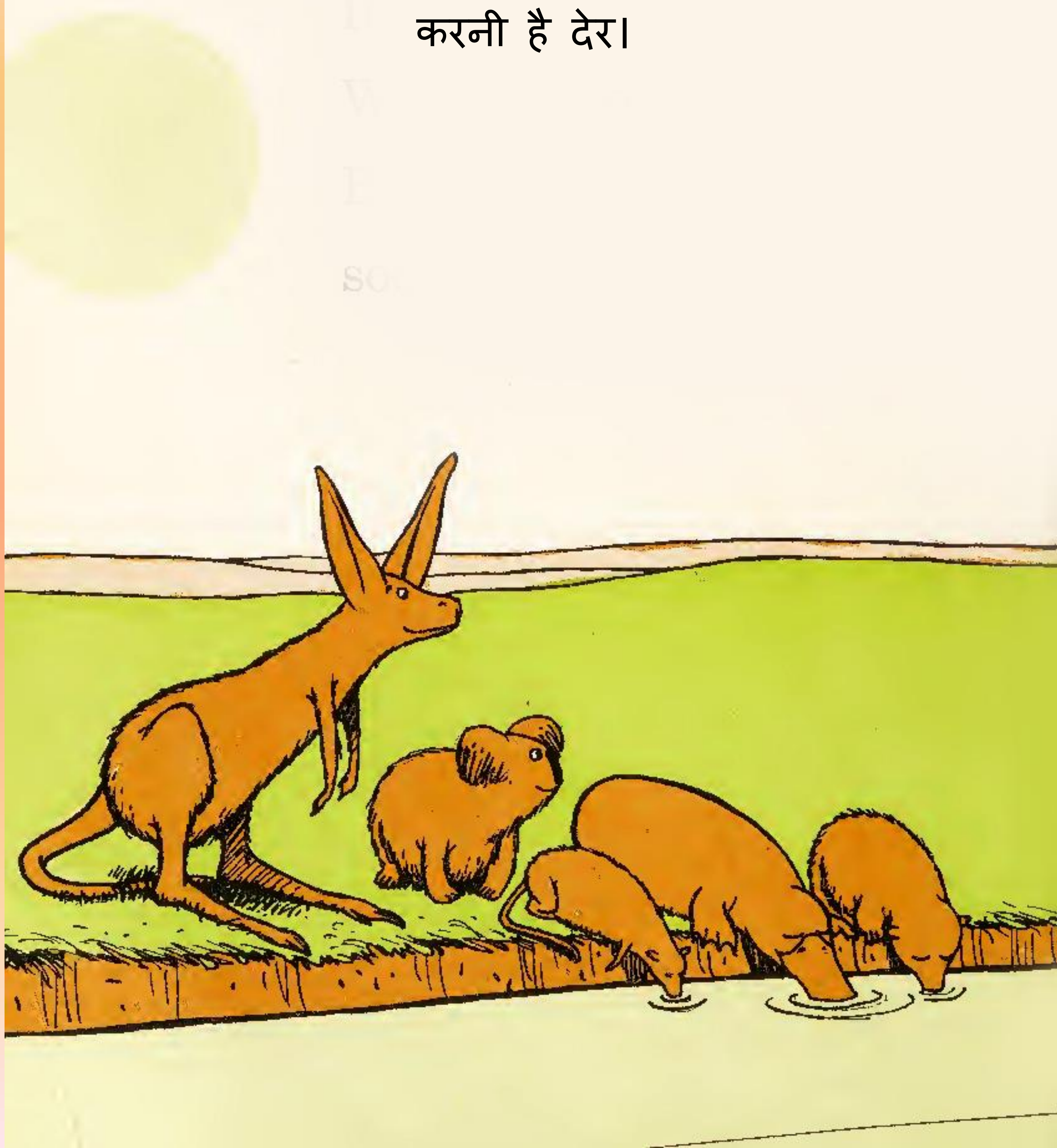
माँ कहती है

“जल्दी करो हमको

हो रही अबेर,

सोने के लिए नहीं

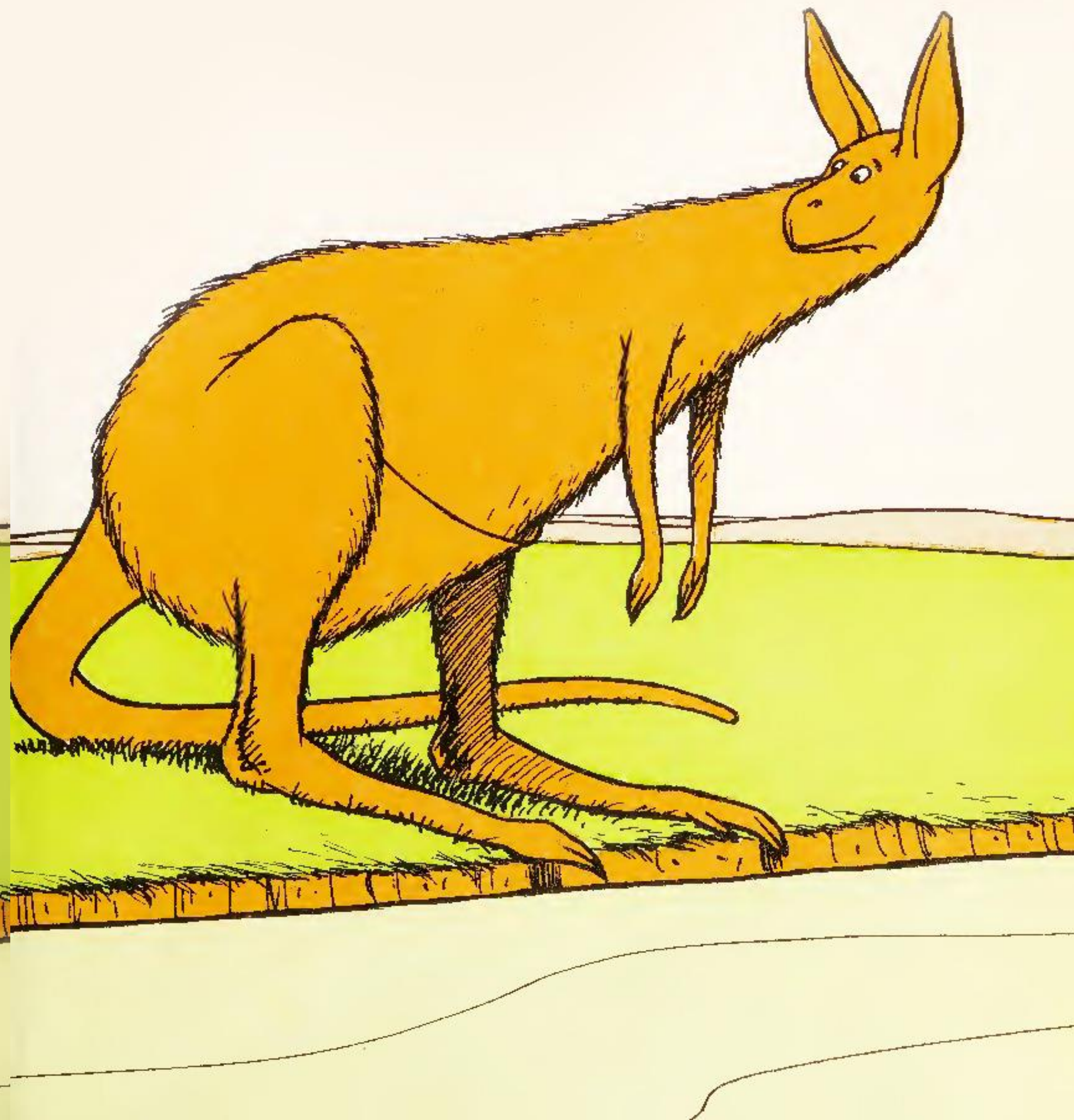
करनी है देर।



सारे रोए और चिल्लाए,

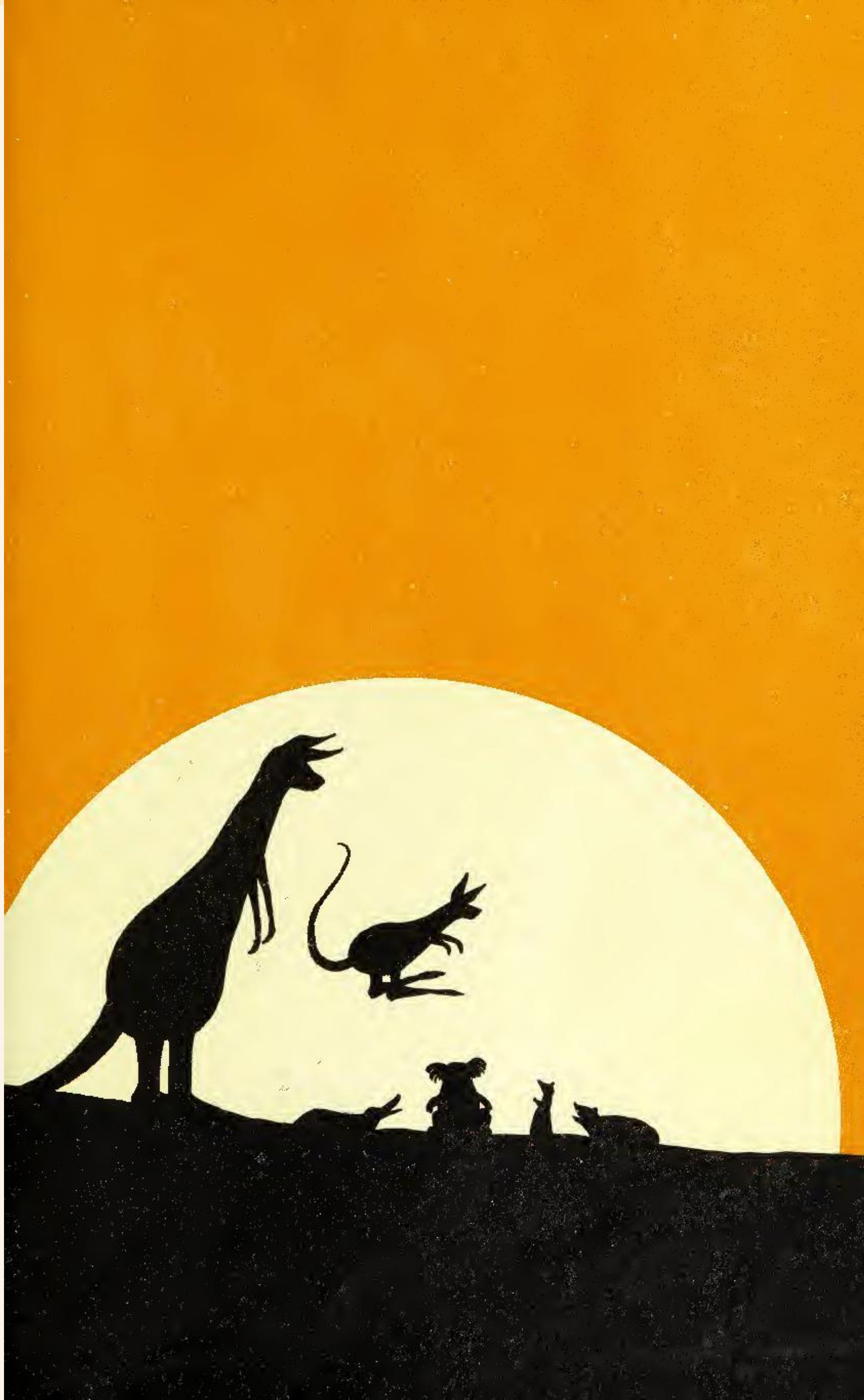
“खेलने के सिवा हमें

कुछ और ना भाए।”



खेल-खेलकर धूम मचाई,
सूरज छिप गया
रात ढल आई।
हुआ अँधेरा
माँ गुस्साई।

जल्दी से थैली
में चढ़ जाओ,।
देर करने वाले
को चपत लगाओ





चूहा रह गया पीछे भाई

आलसी कहकर खीझ उड़ाई।

फुदक-फुदक माँ बढ़ती जाए,

जँभाई लेने से कोई ना शरमाए।



सबके घर पर रुक-रुक जाए।

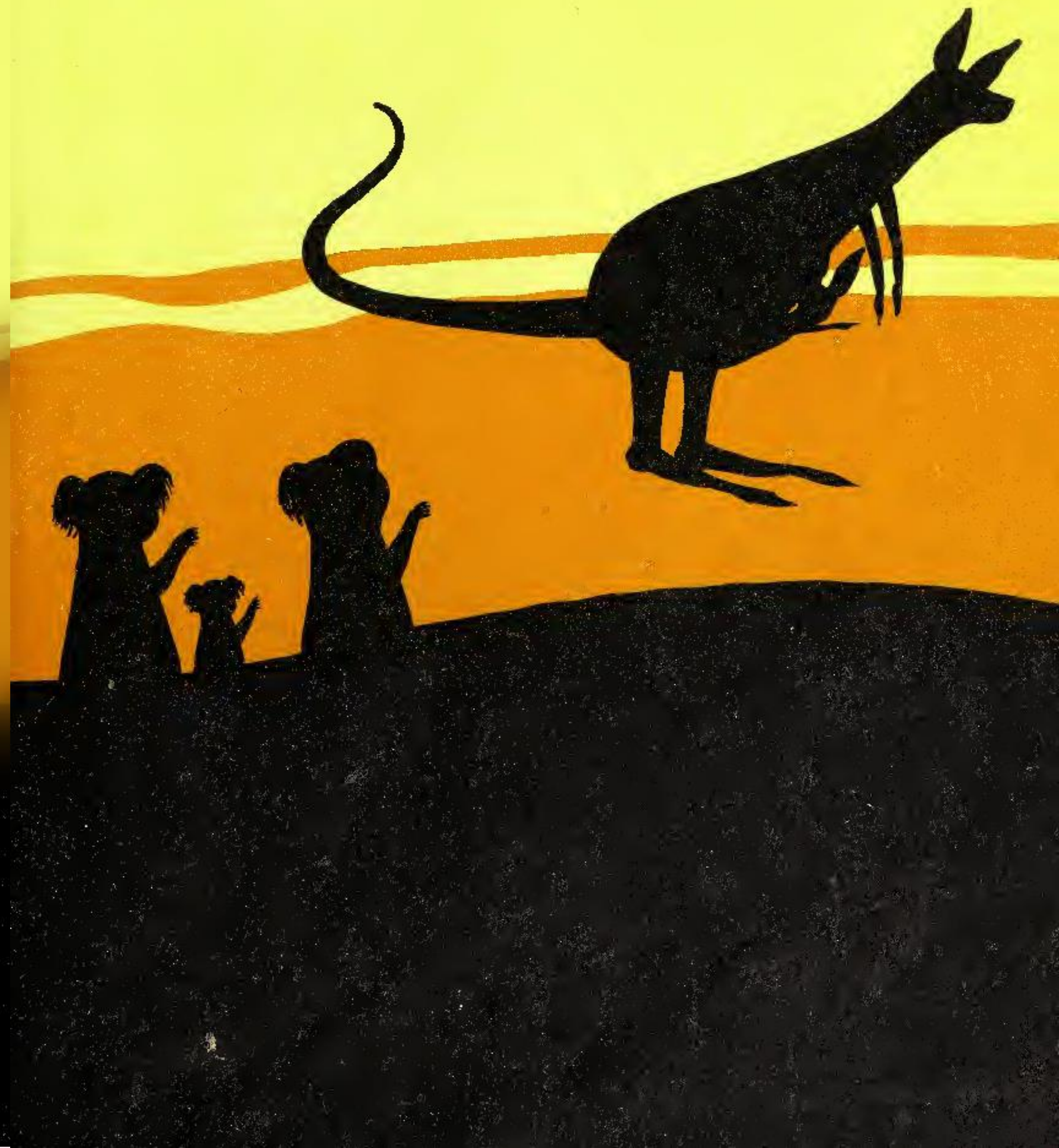
मात-पिता ये सीख सिखाएँ,

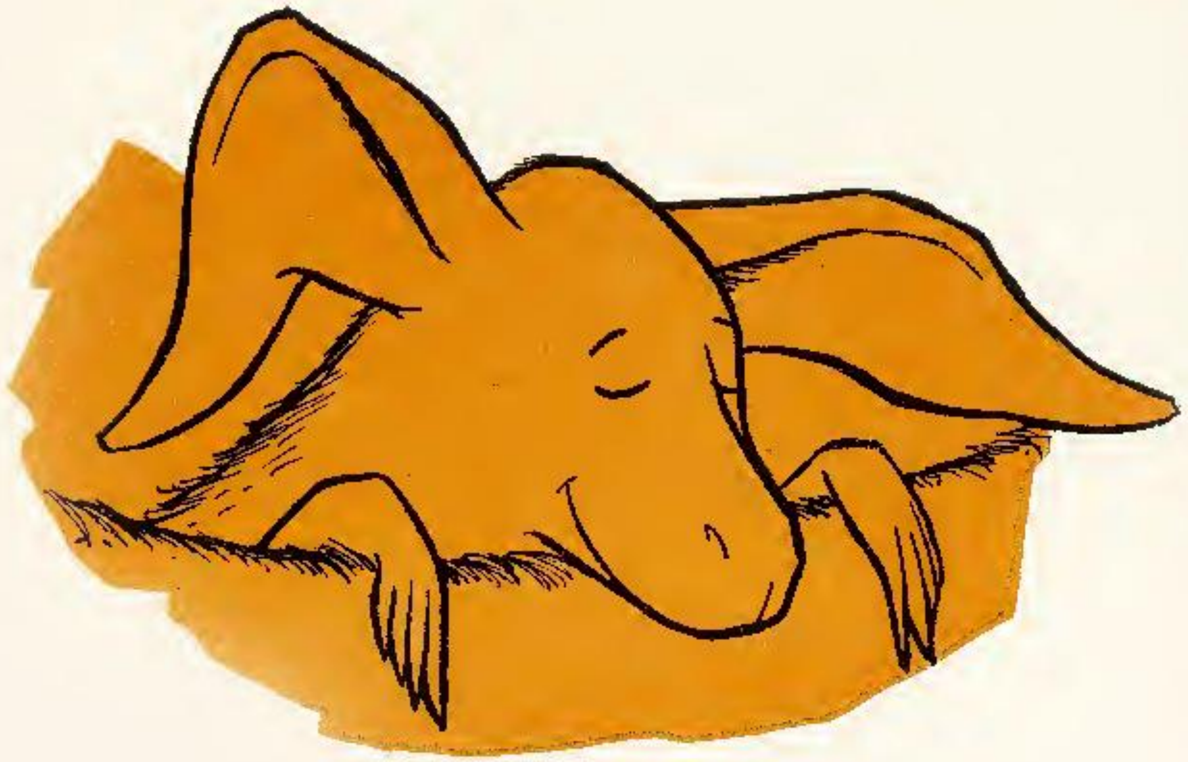
"विनम्र रहो और पंजा हिलाओ

छोटे कंगारू को

शुभ रात्रि कहकर जाओ।"







जल्द ही वह भी घर
पर पहुँचता है। उसने
चार नए दोस्त बनाए हैं।
अब वह सोता है।
उसका दिन ख़त्म हो जाता है।

अंत